Roll No. 12325 80106

Total No. of Questions : 5]

[Total No. of Printed Pages : 8

(2034)

UG (CBCS) Ist Year Annual Examination

2742

B.A. HINDI

(Madhyakalin Hindi Kavita)

(Core)

Paper : HIND 103

Time : 3 Hours]

[Maximum Marks : 70

नोट :- सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. सही विकल्प चुनिए :

(i) कबीरदास किस काल के कवि हैं ?

(क) आदिकाल

(ख) रीतिकाल

(ग) भक्तिकाल

(ii) कबीर ईश्वर के किस रूप में विश्वास रखते थे ?

(क) सगुण

(ख) निर्गुण

(ग) दोनों

(iii) सूरदास की भक्ति किस प्रकार की थी ?

(क) सख्य

(ख) दास्य

(ग) माधुर्य

(iv) सूरदास के गुरु का नाम है :

(क) बल्लभाचार्य

(ख) रामानंद

(ग) विट्ठलनाथ

(v) तुलसीदास की पत्नी का नाम क्या था ?

(क) पद्मावती

(ख) लीलावती

(ग) रत्नावली

(vi) तुलसीदास का बचपन का नाम क्या था ?

(क) लक्ष्मणदास

(ख) रामबोला

(ग) भोलाराम

(vii) मीराँबाई का जन्म कब हुआ ?

(क) 1398 में

(ख) 1532 में

(ग) 1498 में

(viii) मीराँबाई किसकी अनन्य भक्त थीं ?

(क) निर्गुण ब्रह्म

(ख) शिव

(ग) कृष्ण

(ix) रसखान के काव्य का आलम्बन कौन है ?

(क) कृष्ण

(ख) शिव

(ग) ब्रह्म

(x) बिहारी का जन्म कहाँ हुआ ?

(क) ग्वालियर

(ख) मथुरा

(ग) आगरा

(xi) भूषण की काव्य भाषा क्या है ?

(क) अवधी

(ख) ब्रज

(ग) खड़ी बोली

(xii) कवि भूषण को 'भूषण' की उपाधि किसने दी ?

(क) चित्रकूट नरेश सोलंकी ने

(ख) काशी नरेश रिसाल ने

(ग) छत्रसाल ने

(xiii) 'बिहारी सतसई' के रचयिता हैं :

(क) घनानन्द

(ख) कबीरदास

(ग) बिहारी

(xiv) घनानन्द के काव्य का मुख्य वर्ण्य विषय क्या है ?

(क) शृंगार

(ख) भक्ति

(ग) युद्ध 1×14=14

2. (क) सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

दुलहनी गावहु मंगलचार,

हम घर आए हो राजा राम भरतार॥

तन रत करि मैं मन रत करिहूँ पंचतत्त बराती।

राँमदेव मोरैं पाहुनैं आये मैं जोबन मैं माती॥

अथवा

माधव ! यह ब्रज को व्योहार !

मेरो कह्यो पवन को भुस भयो, गावत नन्दकुमार॥

एक ग्वारि गोधन लै रैंगति, एक लकुट कर लेति।

एक मंडली करी बैठारति, छाक बाँटि कै दैति॥

(ख) कबीरदास का साहित्यिक परिचय दीजिए।

अथवा

सूरदास की काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

7+7=14

3. (क) सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

अबलौं नसानी, अब न नसैहों।
राम-कृपा भव-निसा सिरानी, जागे फिरि न डसैहौं॥
पायेऊँ नाम चारु चिंतामनि, उर कर ते न खसैहौं।
स्यामरूप सुचि रुचिर कसौटी; चित-कंचनहि कसैहों॥

अथवा

म्हाराँ री गिरधर गोपाल दूसराँ णाँ कूयाँ।
दूसराँ णाँ कूयाँ साधाँ सकल लोक जूयाँ॥
भाया छाँड्याँ बन्धा छाँड्याँ संगाँ सूयाँ।
साधा ढिंग बैठ-बैठ, लोक लाज खूयाँ॥
भगत देख्याँ राजी ह्ययाँ, जगत देख्याँ रूयाँ।

(ख) तुलसीदास का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनकी साहित्यिक रचनाओं पर प्रकाश डालिए

अथवा

मीराँबाई का साहित्यिक परिचय दीजिए। 7+7=14

4. (क) सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

गावैं गुनी गनिका गन्धरब् औ सारद सेस सबै गुन गावत।
नाम अनंत गनंत गनेस ज्यौं ब्रह्मा त्रिलोचन पार न पावत॥
जोगी जती तपसी अरु सिद्ध निरंतर जाहि समाधि लगावत।
ताहि अहीर की छोहरियाँ छछिया भरी छाछ पै नाच नचावत॥

अथवा

कहा कहूँ वाकी दसा, हरि प्राननु के ईस।

बिरह-ज्वाल जरिवो लखैं, मरिवौ भई असीस॥

(ख) बिहारी की काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

अथवा

रसखान के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालिए।

7+7=14

5. (क) सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

तरनि, जगत जलनिधि तरनि, जै जै आनँद ओक।

कोक कोकनद सोक हर, लोक लोक आलोक॥

अथवा

छबि को सदन, मोदमंडित बदन-चंद तृषित चखनि लाल,

कब धौं दिखायहौ।

चटकीलो भेख करे, मटकीली भाँति सों ही मस्ती में

मुरली अधर धरे लटकत आयहौ।

लोचन दुराय, कछू मृदु, मुसक्याय नेह भीनी बतियानि

लड़कांय बतरायहौ।

बिरह-जरत जिय जानि, अपानि प्रानप्यारे, कृपानिधि, आनँद

को घन बरसायहौ॥

=14

(ख) भाषा शैली की दृष्टि से भूषण के काव्य का विवेचन कीजिए।

अथवा

घनानन्द की जीवन परिचय दीजिए। 7+7=14